समाज विकासमाला

मंगूभैया

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

समाज-विकास-माला : ११०

मंगूभैया

सीख देनेवाली सुंदर कहानियां

लेखिका
लीला अवस्थी

संपादक
यशपाल जैन

१९५९

सस्ता साहित्य मंडल-प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल
नई दिल्ली

पहली बार : १६५६
मूल्य
सैंतीस नये पैसे

मुद्रक
सत्यपाल धवन
दि सैंट्रल इलैक्ट्रिक प्रैस
दिल्ली

समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने आज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों आदमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में सरकार की ओर से यदि कुछ कोशिश हो रही है तो वही काफी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा।

बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जबसे ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही आसान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार और बोलचाल की हो और जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों।

यह पुस्तक-माला इन्हीं बातों को सामने रखकर निकाली गई है। इसमें कई पुस्तकें निकल चुकी हैं। इन सबकी भाषा बड़ी आसान है। विषयों का चुनाव बड़ी सावधानी से किया गया है। छपाई-सफाई के बारे में भी विशेष ध्यान रखा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

यदि पुस्तकों की भाषा, शैली, विषय और छपाई में उन्हें सुधार की गुंजाइश मालूम हो तो उसकी सूचना निस्संकोच देने की कृपा करें।

—मंत्री

पाठकों से

मेल-जोल में बड़ी शक्ति है। सूत के एक धागे को आसानी से तोड़ा जा सकता है, बहुत से धागों के मिल जाने से उसकी ताकत बहुत बढ़ जाती है।

इस किताब में मंगूभैया ऐसी कहानियां सुनाते हैं, जो प्रेम से रहने और मिल-जुलकर काम करने की शिक्षा देती हैं।

हमारा देश अब आजाद हो गया है, पर उसकी नींव अभी मजबूत होनी है। वह तभी होगी जबकि सारे देशवासी प्यार की महिमा समझेंगे और सब मिलकर देश की भलाई के काम करेंगे। हमें तीन मंत्र याद रखने चाहिए—हम सब एक हैं, भारत हमारा है, हम भारत के हैं।

आप इस किताब को जरूर पढ़ें और इन कहानियों से शिक्षा लें।

—सम्पादक

मंगूभैया

: १ :

लड़नेवाले भाई-बहन

"मंगूभैया आ गए, मंगूभैया आ गए।" चौपाल में बैठे सब लोग खुशी से चिल्ला उठे।

मंगूभैया रोज शाम को चौपाल आते हैं और वहां पर बैठे हुए लोगों को नई-नई कहानी सुनाते हैं। इसीलिए उन्हें देखते ही लोग खुशी से उछल पड़ते हैं।

अपनी चोटी को बल देते, मुस्कराते, झूमते, मंगूभैया सबके बीच में आकर बैठ गए। मंगूभैया के बैठते ही सब चुप हो गए। मंगूभैया ने कहा, "ओहो, आज तो चौपाल में बच्चे भी बहुत से आये हैं। अच्छा, मैं आज लड़नेवाले भाई-बहनों की कहानी सुनाऊंगा।"

यह सुनकर बच्चे खुश हो गए और मुस्कराकर एक-दूसरे की ओर देखने लगे।

मंगूभैया ने कहा––लो भाई, सुनो। भैया-दूज के दिन की बात है। सात बरस का बालक कोमल जैसे ही अपने घर से निकला कि गली के लड़के आ गये और लगे उसे चिढ़ाने––"वह आया दो टीकेवाला! दो

टीके वाला ! गधे के सिर पर दो टीके !"

बात यह थी कि कोमल की दो बहनें थीं---सिंदू और बिंदू। दोनों बहनों में झगड़ा था। इसलिए दोनों ने कोमल के अलग-अलग टीके लगाये थे।

कोमल को दोनों बहनों पर बड़ा क्रोध आया। यदि वे उसके दो टीके न लगातीं तो लड़के उसे क्यों चिढ़ाते ? उसने टीके मिटाने के लिए जैसे ही अपना हाथ उठाया कि सिंदू और बिंदू ने, जो उसीके साथ आई थीं, उसके दोनों हाथ पकड़ लिये। सिंदू ने कहा, "अगर तू मेरा लगाया हुआ टीका मिटायगा तो मैं तुझे मारूंगी।" बिन्दू ने कहा, "अगर मेरा टीका मिटायगा तो मैं तुझसे कभी नहीं बोलूंगी।"

बेचारा कोमल उनकी बात सुनकर डर गया। उसकी आंखों में आंसू आ गये। उसी हालत में वह बूआ के पास पहुंचा। बूआ को जब सारी बात मालूम हुई तो उन्होंने उसे समझाया कि इसमें परेशान होने की कोई बात नहीं है। तुम्हारे दो बहनें हैं, इसलिए दो टीके लगे हुए हैं।

कोमल ने कहा, "लेकिन बूआ, मोहन और रामू के भी तो दो-दो बहने हैं, परन्तु उनके माथे पर एक ही टीका है। मेरे माथे पर इन्होंने दो टीके क्यों लगाये हैं ?"

बूआ सिंदू और बिंदू के झगड़े की बात जानती थीं। उन्होंने दोनों बहनों को बुलवाया और कहा, "मैं पहले तुम तीनों को भैया-दूज की कहानी सुनाती हूं, फिर तुम्हारे झगड़े का फैसला करूंगी।"

सिंदू, बिंदू और कोमल तीनों बूआ के पास बैठ गए।

बूआ ने कहानी कहनी शुरू की——

सूरज और चंदा भाई-भाई हैं। एक बार दोनों में झगड़ा हो गया, जैसे सिंदू और बिंदू में होता रहता है। उन्होंने एक-दूसरे को खूब मारा और प्रतिज्ञा की कि वे एक-दूसरे की शकल कभी नहीं देखेंगे। सूरज और चंदा की बहन है धरती। उसे इनके झगड़े के बारे में कुछ भी मालूम नहीं था।

भैया-दूज का त्यौहार आया। धरती अपने भाइयों के टीका करने गई। उस समय उसे उनके झगड़े की बात मालूम हुई। उसने दोनों भाइयों को मनाने का प्रयत्न किया, परंतु उन्होंने आपस में समझौता नहीं किया।

धरती को इस झगड़े से बहुत दुःख हुआ और वह रोने लगी। शाम तक वह लगातार रोती रही। जब दोनों भाइयों से अपनी बहन का दुःख न देखा गया तो उन्होंने सुलह कर ली। अपनी बहन धरती को

उन्होंने वचन दिया कि साल में एक बार भैया-दूज के दिन हम दोनों भाई आसमान में दो क्षण के लिए शाम



इस तरह तीनों आपस में मिल गये

को अवश्य इकट्ठे हुआ करेंगे। उसी समय तुम टीका लगा दिया करना। धरती खुश हो गई। उसने झट भाइयों की आरती उतारी और उनके टीका कर दिया। फिर झगड़े को भूलकर तीनों भाई-बहनों ने इकट्ठे बैठकर लड्डू खाये। झगड़ालू भाई अपनी प्यारी बहन के कारण आपसी झगड़ा भूल गए और उन्होंने धरती को भैया-दूज का उपहार दिया। इस तरह तीनों आपस में मिल गए। अच्छा, सिदू-बिदू, अब तुम बताओ कि तुम्हें क्या करना

चाहिए ?"

सिद्दू और बिद्दू ने कहा, "बूआ, हमें आपस में झगड़ना नहीं चाहिए और कोमल के माथे पर एक ही टीका लगाना चाहिए ।"

कोमल अपनी बहनों की बात सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ और दोनों को उसने भैया-दूज का इनाम दिया ।

... ...

इतना कहकर मंगूभैया थोड़ी देर के लिए चुप हो गए। फिर बोले, "समझे भाइयो, प्रेम में इतना बल है । प्रेम से झगड़ा, कड़वाहट, वैर सभी कुछ आसानी से दूर किया जा सकता है । प्रेम पुण्य है, घृणा पाप है । भाईचारे में प्रेम बसता है, प्रेम में भगवान। झगड़े में तो शैतान का निवास होता है । कलह से हमारा ही बुरा होता है ।"

मंगूभैया की बात सुनकर सबको बहुत हर्ष हुआ और बच्चों ने वादा किया कि वे आगे आपस में कभी झगड़ा नहीं करेंगे ।

: २ :

भारत-मां के बेटे

दूसरे दिन मंगूभैया ने चौपाल में आते ही पूछा, "अच्छा, बताओ भारत मां का पहला बेटा कौन था ?"

चौपाल में बैठे लोग एक दूसरे की ओर देखने लगे। उन्हें मंगूभैया के सवाल का कोई जवाब नहीं सूझा। लोगों ने समझ लिया कि आज मंगूभैया फिर कोई ज्ञान की पुस्तक पढ़कर आये हैं और उन्हें नई बात बतानेवाले हैं। अक्सर मंगूभैया बड़ी-बड़ी, मोटी-मोटी किताबें शहर से लाकर पढ़ते रहते थे और गांववालों को अच्छी-अच्छी बातें बताते थे।

जब किसी ने मंगूभैया की बात का जवाब न दिया तो मंगूभैया ने कहा, "अच्छा, तो आज मैं तुम्हें भारत के पहले और दूसरे बेटों के बारे में बताऊंगा। भारत मां का सबसे पहला बेटा था नेगरिटो। वह यहां लाखों बरस पहले आया था। फिर पश्चिमी एशिया से भारत-मां का दूसरा बेटा आया। उसका नाम आस्ट्रिक था। भारत-मां के घर आने पर उसका नाम निषाद पड़ा। उसी दिशा से भारत-मां के तीसरे बेटे का आगमन हुआ। यह बेटा द्रविड़ कहलाया। मां का चौथा बेटा किरात था, जो उत्तर तथा उत्तर-पूर्व से तिब्बत-चीन से आया था। इसके बाद भारत-मां के पांचवें बेटे आर्य का आना हुआ।

"इन पांचों बेटों के स्वभाव अलग-अलग थे। नेगरिटो को केवल खाने की चिन्ता रहती थी, इसलिए किसी दूसरी बात की ओर ध्यान न देकर अपना सारा

समय उसी चिन्ता में बिताता था। न उसे कपड़ों का शौक था, न घर में रहने की इच्छा। वन में मारा-



भारत-मां के बेटे

मारा फिरता था। एक दिन जंगल में भटकते-भटकते पता नहीं, वह कहां चला गया। उसके बाद फिर वह दिखाई नहीं पड़ा।

"निषाद और द्रविड़ का स्वभाव ऐसा नहीं था। वन में भटकते फिरना उन्हें अच्छा नहीं लगता था। उन्होंने जंगल में भटकने के बदले मैदानों में खेती करनी शुरू की। पशु पाले। घर बनाये। शादी-ब्याह की प्रथा डाली और सुखी जीवन बिताने लगे। धीरे-धीरे उनका परिवार बढ़ने लगा।

"किरात बेटे को जमीन पर रहना अच्छा नहीं लगा, इसलिए वह हिमालय पहाड़ की तराई में रहने लगा। उसने भी विवाह किया और हिमालय की तराइयों में अपना कुटुम्ब बसा लिया।

"भारत-मां का सबसे छोटा बेटा था आर्य। उसने अपने पहले आये भाइयों के सब गुण अपनाये। उसने रहने के लिए घर बनाया, अनाज के लिए हल चलाये, पशु पाले और शरीर ढकने के लिए कपास के पौधों से रुई इकट्ठी की और उससे कपड़े बनाये। उसने पारिवारिक जीवन बिताना अच्छा समझा और विवाह करके सुख से रहने लगा।"

चौपाल में बैठे एक आदमी ने पूछा, "आजकल भारत-मां के बेटे कहां हैं?"

"भारत-मां के बेटे अपनी सन्तानों के रूप में आज भी यही हैं, इसी भारतवर्ष में।" मंगूभैया ने उत्तर दिया।

"भारतवर्ष में कहां है?" दूसरे ने कुछ अचरज से पूछा।

"देखो, दक्षिण में रहनेवाले भारत-मां के द्रविड़ पुत्र की संतान हैं, हिमालय की तराई में तिब्बत के समीप रहनेवाले किरात वंश के लोग हैं, आर्य-पुत्र की सन्तान उत्तर भारत, बंगाल आदि स्थानों में है।"

"तो क्या भारतवर्ष के सब लोग भाई-भाई हैं ?" तीसरा पूछ बैठा।

मंगूभैया ने जवाब दिया, "हां, भारत के सब लोग, चाहे वे बंगाल के हों या मद्रास के, महाराष्ट्र के हों या आसाम के, गुजरात के हों या बिहार के, पंजाब के हों या उत्तरप्रदेश के, सब भाई-भाई हैं, क्योंकि हम सब भारत की प्रथम संतान द्रविड़, किरात, आर्य की संतानें हैं और हमें अपने पूर्वजों को सुखी रखने के लिए हमेशा मिलकर ही रहना चाहिए।"

: ३ :

भाषा-बिटिया

तीसरे दिन जब मंगूभैया चौपाल में आये तो सब पूछने लगे, "भैया, आज कौनसी कहानी होगी ?"

मंगूभैया ने कहा, "आज मैं भाषा-बिटिया की कहानी सुनाऊंगा। भाषा-बिटिया के बारे में यह बात ध्यान रखने की है कि उसकी वंश-परम्परा पिता के बदले माता से चलती है। हम लोगों में वंश-परम्परा पिता से चलती है।

"हजारों साल पहले लोग आपस में इशारे से अपने मन की बात कहा करते थे, वैसे ही जैसे गूंगे

अब भी किया करते हैं। उन्हीं इशारों में बात करने वाले लोगों के बीच कुछ समय बाद एक सुंदर-सी लड़की का जन्म हुआ। लोगों ने इस लड़की के जन्म की खूब खुशियां मनाईं, क्योंकि उन्हें इशारे के बदले मुंह से कुछ कह सकने की शक्ति मिल रही थी। इस लड़की का नाम रखा गया भाषा। भाषा-बिटिया ने ही सबको सबसे पहले बोलना सिखाया। भाषा जब जवान हुई तो उसने वेद लिखे। फिर उसका विवाह हुआ और उसकी एक पुत्री हुई, जिसका नाम संस्कृत रखा गया।



संस्कृत और उसकी बेटियां

"संस्कृत जब विवाह के योग्य हुई तो उसका विवाह

कर दिया गया। संस्कृत की पुत्री का नाम पाली रखा गया। पाली से प्राकृत और प्राकृत से अपभ्रंश का जन्म हुआ। अपभ्रंश का परिवार बहुत फूला-फला। उसकी चौदह कन्याएं हुईं, जिनके नाम हिन्दी, गुजराती, मराठी, उड़िया, बंगला, तामिल, तेलगू आदि रखे गए।"

चौपाल में बैठे लोगों में से एक ने कहा, "द्वारकादादा के यहां भी चौदह लड़कियां हैं।"

"हां, द्वारकादादा के घर में भी चौदह लड़कियां हैं।" मगूंभैया ने अपनी बात को जारी रखते हुए कहा, "परन्तु द्वारकादादा के वंश की लड़कियों और भाषा के वंश की लड़कियों में बड़ा अन्तर है। द्वारकादादा के वंश की लड़कियों के घर वाले बड़े मेल-जोल से रहते हैं, उनमें एकता है, प्रेम है। उनके पास किसी चीज की कमी नहीं है। अच्छा खाते हैं, अच्छा पहनते हैं' उनके घर से हमेशा हँसने-बोलने की आवाजें आती रहती हैं। उन्हें देखकर किसका मन प्रसन्न नहीं होता ? परन्तु भाषा के वंश की इन चौदह पुत्रियों में इतनी एकता नहीं है। कोई कहती है--हम बड़े हैं, कोई कहती है--हम।"

"भैया, उनमें एकता कैसे हो सकती है ?" चंदू ने पूछा।

"सब एक-दूसरे को समान समझें, सब नम्र हो जायं। बस एकता हो जायगी। तब कैसी भी आंधी



प्यार में और एकता में बड़ी ताकत है

उन्हें नहीं उखाड़ सकती। प्यार में और एकता में बड़ी ताकत होती है।"

: ४ :

अगस्त्य ऋषि

चौथे दिन मंगूभैया जैसे ही चौपाल में आकर बैठे उन्होंने कहा, "आज मैं तुम लोगों को अगस्त्य ऋषि की कथा सुनाऊंगा।"

चौपाल में उपस्थित लोग संभलकर बैठ गए।

मंगूभैया ने कहा—अगस्त्य ऋषि उत्तर भारत के रहनेवाले थे और बड़े विद्वान् थे। अपने ज्ञान के कारण वह बहुत प्रसिद्ध थे। उनके ज्ञान की चर्चा सुन कर दूर-दूर से लोग उनके पास अपने पुत्रों को पढ़ने के लिए भेजने लगे। अगस्त्य ऋषि के आश्रम में कई विद्यार्थी इकट्ठे हो गए। ऋषि सब विद्यार्थियों को बड़े ध्यान से पढ़ाया करते थे। इन्हीं विद्यार्थियों में एक का नाम था विन्ध्य। वह बहुत ही होशियार था। अगस्त्य उसे बहुत चाहते थे।

आश्रम में बारह साल विद्या ग्रहण करने के बाद विंध्य घर गया। और वहां देखभाल में लग गया। लोग उसे विंध्याचल या विंध्य पर्वत कहने लगे। कई बरस बीत गए। एक दिन विंध्याचल ने सूरज को आज्ञा दी कि वह सिर्फ उसी के चक्कर काटा करे। सूरज उसकी बात सुनकर हँस पड़ा और छिप गया।

सूरज के व्यवहार को देखकर विंध्याचल को बहुत गुस्सा आया। उसने तय कर लिया कि वह सूरज के घमंड को चूर-चूर कर देगा। यह मोचकर उसने अपने शरीर को आकाश की ओर उठाना शुरू किया। वह चाहता था कि वह सूरज का रास्ता रोक दे। जब विंध्याचल बहुत ऊंचा होगया तो सूरज की किरणें दक्षिण भारत की ओर न पहुंच सकीं। वहां के लोग

बहुत दुखी हुए। सारे दक्षिण भारत में अंधेरा छा गया। बीमारी फैल गई। अकाल पड़ने लगा।


विंध्या ने अगस्त्य को साष्टांग प्रणाम किया

कुछ ही समय में यह बात अगस्त्य ऋषि के कानों तक पहुंची। उन्होंने फैसला किया कि वह अपने प्रिय विद्यार्थी की गलती का सुधार अपनी सेवा से करेंगे। वह दक्षिण की ओर चल पड़े।

जब वह विंध्याचल के घर के पास पहुंचे तो विंध्याचल ने अपने गुरु को देखा। गुरु का आशीर्वाद पाने के लिए वह उनके चरणों में साष्टांग प्रणाम करने के लिए लेट गया। अगस्त्य ऋषि ने उन्हें आशीर्वाद

देकर ग्राज्ञा दी कि वह जबतक दक्षिण से यात्रा कर के वापस न लौटें, वह इसी प्रकार धरती पर लेटे रहें। विंध्या ने गुरु की ग्राज्ञा पूरी करने का वचन दिया। ग्रगस्त्य ऋषि दक्षिण की ग्रोर चले गये। फिर कभी वापस नहीं ग्राये।

"वापस क्यों नहीं ग्राये ?" भोलाराम ने पूछा।

"इसलिए कि विंध्याचल फिर खड़ा होकर ग्राकाश की ग्रोर न बढ़ने लगे। यदि विन्ध्याचल उठ खड़ा होता तो दक्षिणवालों को फिर कष्ट सहना पड़ता।"

पेटूराम ने कहा, "ग्रगस्त्य ऋषि को दक्षिण में बड़ा कष्ट हुग्रा होगा ?"

सबने ग्रचरज से उन्हें देखा। मंगूभैया ने पूछा, "क्यों ?"

पेटूराम बोले, "उत्तर में तो ग्रगस्त्य ऋषि रोटी खाते होंगे, दक्षिण में उन्हें चावल खाने पड़े होंगे।"

पेटूराम की बात सुन सब हँस पड़े। जब हँसी रुकी तो मंगूभैया ने कहा, "दूसरों के सुख के लिए दुख सहना पड़े तो उसे सह लेना चाहिए। यही ग्रगस्त्य ऋषि ने किया। ग्राखिर हम सब भाई हैं। हम चाहें उत्तर में रहते हों, चाहे दक्षिण में, हमें एक दूसरे की मदद करनी ही चाहिए। यही तो इंसानियत है, ग्रच्छाई है, सुख है ग्रौर इसी परमार्थ में भगवान रहते हैं।"

: ५ :

हम सब भारती हैं

पांचवें दिन जब मंगूभैया चौपाल में आये तो लोगों ने शोर मचाकर पूछना शुरू किया कि आज किस ऋषि की कहानी सुनायंगे ? मंगूभैया ने सबको चुप होने का इशारा किया। लोग धीरे-धीरे शांत हो गए। मंगूभैया ने कहा, "आज मैं किसी ऋषि-मुनि की कहानी नहीं सुनाऊंगा। आज मैं भारती की कहानी सुनाऊंगा।"

श्यामू ने पूछा, "क्या यह किसी नेता का नाम है ?"

मंगूभैया हँस दिये। उन्होंने कहा, "नहीं, यह किसी नेता का नाम नहीं है।"

"तो फिर ?" रामखेलावन चाचा ने पूछा।

मंगूभैया ने कहा, "यह सब आपको कहानी सुनने के बाद मालूम हो जायगा। हां, एक बात जरूर है, आप सब उसको जानते हैं। वह आप लोगों के साथ ही यहां बैठा हुआ है।"

मंगूभैया की बात सुनकर सब एक-दूसरे का मुंह देखने लगे, किन्तु उन्हें कोई नया आदमी दिखाई नहीं दिया।

मंगूभैया ने कहना शुरू किया—बात सुंदरनगर की है। सुंदरनगर में बंगाल, मद्रास, महाराष्ट्र, पंजाब आदि सभी प्रान्तों के लोग रहते थे। उस शहर की एक खास बात यह थी कि वहां कोई सराय नहीं थी। यदि कोई आदमी बाहर से आता तो जिस प्रांत का होता, उस प्रांत के निवासी उसे अपने घर ठहरा लेते और उसका आदर-सत्कार करते।

एक दिन शाम को वहां एक मुसाफिर आया। स्टेशन पर उतरते ही उसने सोचा कि कहीं-न-कहीं ठहरने का इंतजाम करना चाहिए, जिससे रात आराम से कट जाय। उसने बोझी से किसी सराय की ओर चलने के लिए कहा। बोझी ने उसे बताया कि शहर में कोई सराय या होटल नहीं है। मुसाफिर को बोझी की बात सुनकर अचरज भी हुआ और चिन्ता भी। बोझी ने उसे परेशान देखकर समझाया कि वह किसी के घर रात काट ले। कोई भी उसे रात-भर ठहरने के लिए जगह दे देगा।

बोझी की बात सुन वह मुसाफिर अपना थैला और बिस्तर ले शहर की ओर चल पड़ा।

शहर पहुंचकर उसने एक मकान का दरवाज़ा खटखटाया। थोड़ी देर बाद मकान का दरवाज़ा खुला और एक बंगालीबाबू धोती-कुरता पहने बाहर आये।

उन्होंने पूछा, "कौन है ?"

मुसाफिर ने उत्तर दिया, "मैं मुसाफिर हूं। रात भर ठहरने के लिए जगह चाहता हूं।"

बंगालीबाबू ने मुसाफिर को ऊपर से नीचे तक देखा और समझ गए कि यह आदमी बंगाली नहीं है। फिर भी उन्होंने पूछा, तुम बंगाली नहीं हो न ?"

"नहीं।" उस मुसाफिर ने कहा, मैं बंगाली नहीं हूं, एक भारती हूं।"

"तो हमारे घर में तुम्हारे लिए जगह नहीं है। यहां सिर्फ बंगालियों के लिए स्थान है।"

मुसाफिर ने पूछा, "ये बंगाली कौन होते हैं ?"

उन्होंने उत्तर दिया, "जो बंगाल में रहते हैं वे बंगाली होते हैं।"

"बंगाल कहां है ?" मुसाफिर ने फिर पूछा।

"तुम्हें इतना भी नहीं मालूम। बंगाल भारत में है और कहां है ?"

मुसाफिर ने कहा, "मैं भी भारती हूं। फिर आप मुझे जगह क्यों नहीं देते ?"

बंगालीबाबू ने कोई उत्तर नहीं दिया और जोर से दरवाज़ा बंद कर दिया।

मुसाफिर ने जाकर दूसरे घर का दरवाज़ा खटखटाया। यह एक मद्रासी का घर था। मद्रासी सज्जन

बाहर आये और पूछा, "क्या बात है ?"

"मैं रात भर ठहरने के लिए जगह चाहता हूं ।"

"क्या तुम मद्रासी हो ?"

मुसाफिर ने कहा, "मैं भारती हूं ।"

"हमारे घर में सिर्फ मद्रासी ठहर सकता है।" मद्रासीबाबू ने कहा ।

"मद्रास कहां हैं ?" मुसाफिर ने पूछा ।

"मद्रास दक्षिण में है ।"

"क्या वह भारत में नहीं है ?"

"भारत में नहीं तो क्या अमरीका में है ?" मद्रासी सज्जन ने कुछ नाराज़ होकर कहा ।

"फिर आप मुझे क्यों नहीं ठहरने देते ?"

मद्रासी सज्जन से कुछ उत्तर न बन पड़ा । उन्होंने दरवाज़ा बंद कर लिया और अंदर चले गए ।

वह मुसाफिर इसी प्रकार मराठी, पंजाबी, गुजराती, उत्तरप्रदेशी, मध्यप्रदेशी आदि सबके घर गया, परंतु किसीने उसे अपने घर में नहीं ठहरने दिया ।

दूसरे दिन बंगालीबाबू ने यह पता लगाना चाहा कि आखिर उस मुसाफिर को किसने अपने घर में जगह दी । अतः वह किसी-न-किसी बहाने सबके घर हो आये, परंतु उस मुसाफिर का कहीं पता न लगा । उन्हें

थोड़ी चिन्ता भी हुई कि बेचारा रातभर न जाने कहां रहा होगा।

बंगालीबाबू उसके बारे में सोच ही रहे थे कि उनका लड़का दौड़ता हुआ आया और बोला, "बाबा-बाबा, पीपल के पेड़ के नीचे एक आदमी खड़ा है, जो सब भाषाएं बोलता है। चलो, तुम भी उसे देख आओ।"

बंगालीबाबू अपने बेटे को साथ लेकर चले गए। पीपल के पेड़ के नीचे काफी भीड़ इकट्ठी थी। भीड़ को चीरते हुए जब बंगालीबाबू उस अनोखे आदमी के पास पहुंचे तो एकदम अवाक् रह गए। यह वही आदमी था, जो कल रात रहने के लिए जगह मांग रहा था। वह मुसाफिर सबसे अलग-अलग भाषाओं में बात कर रहा था। एक पंजाबी महोदय ने कहा, "मुसाफिरजी, आप मेरे घर चलकर रह सकते हैं।"

मुसाफिर ने कहा, "जी, मैं पंजाबी नहीं हूं, मैं भारती हूं।"

पंजाबीबाबू को रात की घटना याद आ गई। वह लज्जित हो गए। इसी प्रकार बंगाली, गुजराती, मराठी आदि सभी लोगों ने उस मुसाफिर को अपने घर में ठहराने के लिए कहा, परन्तु उस मुसाफिर ने किसी के घर पर ठहरना स्वीकार नहीं किया। जैसे-

जैसे-जैसे वह मुसाफिर किसी के घर जाने से इन्कार करता, वैसे-वैसे लोग उसे और अधिक बुलावा देते, क्योंकि जिसके भी घर वह मुसाफिर ठहरता, उसीका मान बढ़ जाता।

अंत में मुसाफिर ने कहा, "मैं उसके घर जा



हम सब भारती हैं

सकता हूं, जो पहले भारती है, फिर बंगाली, गुजराती, मराठी आदि।"

सबने चिल्लाकर कहा, "हमारे घर चलिए। हम भारती हैं। हमारे घर चलिए।"

कोलाहल को शांत करते हुए मुसाफिर ने कहा, "अब आप लोग सब भारती हो गए, इसलिए मेरा

काम पूरा हो गया। मैं अब जाता हूं।"

यह कहकर मुसाफिर स्टेशन की ओर चल पड़ा। भीड़ भी उसके साथ चल पड़ी।

: ६ :

ब्राह्मण और हरिजन

छठे दिन मंगूभैया समय पर चौपाल नहीं पहुंचे। वह हमेशा समय पर पहुंच जाते थे, इसलिए लोग कुछ परेशान-से हो गए। जब काफी समय हो गया तो उन्होंने सोचा, शायद मंगूभैया आज नहीं आयंगे। परन्तु जैसे ही लोग घर जाने के लिए उठे, मंगूभैया सामने से आते दिखाई दिये। लोग उत्सुकता से उनकी ओर देखने लगे।

मंगूभैया अपनी जगह पर आकर बैठ गए और बोले, "भाइयो, मुझे क्षमा करना। आज बहुत देर हो गई।"

रामू चौधरी ने पूछा, "कहां रह गए थे, भैया ?"

"रास्ते में एक जगह झगड़ा हो रहा था, उसी को सुलझाने में देर हो गई।" मंगूभैया ने उत्तर दिया।

"झगड़ा हो रहा था ! कहां पर ? किससे ? किसी

के चोट तो नहीं आई ?" बलराम ने खड़े होकर कई सवाल मंगूभैया से एक ही सांस में कर डाले।

मंगूभैया ने कहा, "आप लोग आराम से बैठ जाइये। आज कहानी के बदले में आपको आज के झगड़े की बात सुनाऊंगा। आज की घटना भी कहानी से कम नहीं है और हम लोगों के लिए एक शिक्षा भी है।"

इतना कहकर मंगूभैया सांस लेने के लिए दम भर के लिए रुक गए। फिर बोले---भाइयो, रास्ते में कुछ ब्राह्मणों और हरिजनों में झगड़ा हो रहा था। ब्राह्मण कह रहे थे कि वे महान हैं, पूज्य हैं और सबसे बड़े हैं। हरिजन कह रहे थे कि वे भी ब्राह्मणों से कम महान नहीं हैं। वे सबकी सेवा करते हैं, इस लिए वे सबसे श्रेष्ठ हैं। बस, इसी बात पर दोनों में तनातनी हो गई। ब्राह्मण कहने लगे कि एक-एक हरिजन को गांव से मार-मार कर भगाना चाहिए और हरिजन कहने लगे कि ब्राह्मणों को गांव से निकाल देना चाहिए, तभी हरिजन गांव में सुख-चैन से रह सकते हैं।

जिस समय ये बातें हो रही थीं, मैं वहां पर पहुंचा। मैंने उन्हें शांत कराया और उनसे कहा कि मेरी ननिहाल में पांच ब्राह्मण रहते हैं, जो बिना पैरों के हैं और खूब दौड़ते हैं। वहीं पांच हरिजन भी रहते

हैं, जो बिना सिर के जी रहे हैं।

यह समाचार सुनकर सब बहुत ही चकित हुए, और फिर एक साथ चिल्ला उठे, "यह झूठ है, सरासर झूठ है। ऐसा कभी नहीं हो सकता।"

मैंने उत्तर दिया, "वाह, मैंने उन्हें अपनी आंखों से देखा है और मुझे ऐसा लगता है कि आप लोगों में से बहुत से लोग बिना सिर के और कुछ बिना पैर के जीना चाहते हैं।"

उपस्थित लोगों ने चिल्लाकर कहा, "यह सब झूठ है, यह सब झूठ है।"

मैंने कहा--आदमी का सिर ब्राह्मण है, क्योंकि हमारा सिर ही बुद्धि का स्थान है, हाथ क्षत्रिय हैं, क्योंकि वे शक्ति हैं, पेट वैश्य है, क्योंकि सारे शरीर का लेन-देन वहीं से होता है और पैर शूद्र हैं, क्योंकि वे सेवा करते हैं और पूरे शरीर को सम्भाले रहते हैं। जो ब्राह्मण कहते हैं कि वे शूद्रों या हरिजनों को गांव से निकाल देंगे, उन्हें अपने शरीर की सेवा करनेवाले पैरों को काटकर फेंक देना चाहिए। इसी प्रकार जो हरिजन कहते हैं कि वे ब्राह्मणों को गांव से निकाल कर ही दम लेंगे, उन्हें अपने सिर को काटकर अलग कर देना चाहिए। जिस प्रकार शरीर में सिर, धड़, हाथ, पैर सभी का महत्व है, उसी प्रकार हमारे समाज

में भी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र सभी का अलग-अलग महत्व है। किसी को भगाकर या हटाकर आप सुख से नहीं जी सकते। मनुष्य ही नहीं, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे, फूल-पत्ते, सभी का इस संसार में अपना-अपना महत्व है।



जाति से न कोई छोटा है, न बड़ा

आज के आजाद भारत में न कोई जात-पात के कारण बड़ा है, न छोटा जो अच्छे काम करता है, वही बड़ा है, चाहे वह ब्राह्मण हो या हरिजन। ब्राह्मण और हरिजन दोनों ही मनुष्य हैं और मनुष्य मनुष्य से घृणा करे, इससे अधिक मूर्खता की बात क्या हो सकती है? हम जबतक एक नहीं होंगे, हमारा देश

कैसे शक्तिशाली होगा ?

इतना कहकर मंगूभैया चुप हो गए।

"फिर क्या हुआ ?" चौधरीजी ने पूछा !

"उन लोगों की समझ में मेरी बात आ गई और उन्होंने वादा किया कि वे कभी आपस में नहीं लड़ेंगे।"

: ७ :

सबसे बड़ी शक्ति

सातवें दिन मंगूभैया ने कहानी शुरू की--

एक गांव था, ऐसा ही जैसा कि अपना है। उसमें हिन्दू, मुसलमान और ईसाई जाति के लोग रहते थे। हिन्दू, मुसलमान और ईसाइयों में भी भिन्न-भिन्न सम्प्रदाय को माननेवाले लोग थे। जैसे हिन्दुओं में कुछ शिव के भक्त थे तो कुछ विष्णु के, कुछ देवी के। मुसलमानों में सुन्नी मुसलमान थे तो शिया मुसलमान भी थे। इसी प्रकार ईसाइयों में भी कुछ रोमन कैथोलिक थे तो कुछ प्रोटेस्टेंट सम्प्रद्राय के माननेवाले थे।

गांव बहुत अच्छा था। खूब उपजाऊ ज़मीन थी। गांव के किनारे ही नदी बहती थी, जिससे लोगों को पानी की तकलीफ नहीं होती थी। गांव में कोई बेकार

नहीं था। कुछ-न-कुछ काम सभी करते थे, जिससे उनकी रोजी चलती थी। इस तरह गांव के लोग सुखी थे। फिर भी एक बात थी, जिसके कारण वहां के लोग पूरी तरह सुखी नहीं थे।

"ऐसा क्या था, मंगूभैया ?" छोटेलाल ने पूछा।

——बात यह थी कि उस गांव में एका नहीं था। हिन्दू, मुसलमान और ईसाई सब एक-दूसरे को बुरा कहते थे।

"इस तरह तो गांव के सभी लोग बुरे हो गए।" चौधरीचाचा ने मंगूभैया को टोकते हुए कहा।

——हां, इस तरह सभी लोग बुरे हो गए, जबकि गांव के सभी लोग बहुत अच्छे थे, बहुत समझदार और भगवान के भक्त। सभी मेहनती। खूब काम करते थे। हिन्दू मंदिर जाते, पूजा करते। मुसलमान मस्जिद जाते और नमाज़ पढ़ते। ईसाई गिरजाघर जाते और ईसा को याद करते। परंतु पूजा-घरों में जाकर भी वे एक-दूसरी जाति वालों को मारने-पीटने या झगड़ने की बातें किया करते थे, जिससे गांव में अकसर लोगों में मेल-मिलाप का अभाव रहता था। कभी-कभी छोटे-मोटे झगड़े भी हो जाते थे।

एक दिन रमजान जुलाहे के घर पर कोई एक चिट्ठी छोड़ गया। लिखा था——आज रात तुम्हारे घर

डाका पड़ेगा। रमजान गांव का सबसे बड़ा जुलाहा था। कुछ पैसे भी उसने जमा कर रखे थे। वह इस चिट्ठी को पढ़कर घबरा गया। गांववालों के पास पहुंचा, परंतु सिवा मुसलमानों के उसकी सहायता करने के लिए कोई भी राज़ी नहीं हुआ। वैसे डर सभी लोग गए।

रात हुई। डाकू आये। वे संख्या में इतने अधिक थे कि गांव के मुसलमान उनका सामना न कर सके। डाकू रमजान को और उसके पड़ोसी मुसलमानों को लूटकर चले गए।

जाते-जाते वे बिहारी बनिए के घर चिट्ठी छोड़ गए कि आठ रोज के अंदर तुम पांच हजार रुपये जंगल में पहुंचा दो, नहीं तो तुम्हारा घर लूट लिया जायगा। बेचारा बिहारी घबरा गया। वह गांव के लोगों के पास मदद के लिए दौड़ा, परन्तु सिवा हिन्दुओं के उसकी मदद के लिए कोई तैयार न हुआ। मुसलमान कहते थे कि तुमने हमारी मदद नहीं की, हम तुम्हारी मदद क्यों करें? ईसाई कहते थे, हम अपनी जान मुसीबत में क्यों डालें?

बिहारी पांच हजार रुपये कहां से देता? उसकी दूकान कुल दो हजार रुपयों की थी। आखिर आठ रोज बाद डाकू आये और बिहारी को लूटकर चले

गए। गांव के हिन्दुओं ने उसकी सहायता की, परंतु उससे कुछ लाभ नहीं हुआ। डाकू संख्या में बहुत अधिक थे और उनके पास बंदूकें थीं। गांव के हिन्दुओं के पास तो लाठियां ही थीं, बस।

इसके बाद एक सप्ताह भी शांति से नहीं बीता था कि जोसफ के घर उसी तरह की चिट्ठी आई, जैसी रमजान के घर आई थी। जोसफ दौड़ा-दौड़ा ईसाइयों के पास गया। उन्होंने कहा, हम लोग तो बहुत थोड़े से हैं। गांव में हिन्दू और मुसलमानों की संख्या बहुत थी; परन्तु वे उनसे नहीं लड़ सके तो फिर हम उनसे कैसे जीत सकेंगे? जोसफ ने कहा, हमें उनसे मदद लेनी चाहिए, परंतु सब जानते थे कि उन्हें हिन्दू और मुसलमानों से कोई सहायता नहीं मिलेगी, क्योंकि उन्होंने हिन्दू-मुसलमानों की कोई सहायता नहीं की थी। ईसाइयों का पादरी हिन्दू-मुसलमानों के मुखिया लोगों से मिला भी, परंतु उससे कोई लाभ न हुआ। उसे दोनों ने टका-सा जवाब दे दिया। आखिर जोसफ का घर भी रात में लूट लिया गया।

रमजान, बिहारी और जोसफ के घर लुट गए। हिन्दू, मुसलमान और ईसाइयों ने एक-दूसरे की मदद नहीं की, परंतु सबके मन में एक बात बराबर

उठती रही कि यदि सब मिलकर लड़ते तो गांव में किसी का नुकसान न हुआ होता। हिन्दू जब आपस में बातचीत करते तो यही कहते। ईसाई भी यही कहते। लोग अपनी गलती समझते थे, परंतु चुप थे। सोचते थे, जो पहले समझौते की बात उठायेगा वह कमजोर-कायर समझा जायगा।

एक दिन सारे गांव में सन्नाटा छा गया। गांव के सब घरों पर रात को डाकू बड़े-बड़े कागजों पर यह लिखकर चिपका गये कि तीन रोज के अंदर पूरा गांव पचास हजार रुपये दे, नहीं तो सारे गांव को चौथे दिन जला दिया जायगा।

सब लोग घबरा गए और चिन्ता में पड़ गए। वैसे पचास हजार रुपये गांववाले दे सकते थे, परंतु इस तरह तो डाकू हमेशा सताते रहेंगे और उनसे रुपया लेते रहेंगे।

आखिर गांव के दो बूढ़े चौधरी रामचरण और जुम्मन चाचा मिले। उन्होंने तय किया कि इस बार की भलाई इसीमें है कि सबलोग बहादुरी के साथ मिलकर डाकुओं का सामना करें और उन्हें एक पैसा भी न दें। चौधरीजी और जुम्मन चाचा पादरी के पास गए और उससे भी सहायता देने के लिए कहा। ईसाई लोग भी डाकुओं का जंगलीपन देख चुके थे,

अतः वे भी इस बात के लिए राजी हो गए।

"चौथे दिन गांव के सब नौजवान रात को पहरे के लिए तैयार हो गए। बड़े-बूढ़े भी लड़ने के लिए तैयार थे। कोई तीन बजे रात को डाकू आये। वे गिनती में पहले से भी अधिक थे, परंतु गांव के लोग



एकता में बड़ी शक्ति है

भी सब मिलकर एक हो चुके थे। नौजवान गांव से काफी दूर हटकर पहरा दे रहे थे। जैसे ही डाकू गांव की ओर बढ़े, नौजवानों ने पीछे से हमला कर दिया। इधर बड़े-बूढ़े भी तैयार बैठे थे। वे भी निकल पड़े। औरतों ने जगह-जगह पत्थर इकट्ठे कर रखे थे उन्होंने पत्थर बरसाने शुरू किये। डाकू इस अचानक

हमले से घबरा गए और भाग खड़े हुए। नौजवानों ने उनसे बंदूकें छीन लीं और जो पकड़े गए, उनकी खूब खबर ली।

तो भाइयो, अब आप समझ गए होंगे कि सब से बड़ी शक्ति एकता में है। कहावत भी है, 'एक चला मरने, दो चले मारने'।"

समाज-विकास-माला की पुस्तकें

१. बदरीनाथ
२. जंगल की सैर
३. भीष्म पितामह
४. शिवि और दधीचि
५. विनोबा और भूदान
६. कबीर के बोल
७. गांधीजी का विद्यार्थी-जीवन
८. गंगाजी
९. गौतम बुद्ध
१०. गांव सुखी, हम सुखी
११. निषाद और शबरी
१२. कितनी जमीन ?
१३. ऐसे थे सरदार
१४. चैतन्य महाप्रभु
१५. कहावतों की कहानियां
१६. सरल व्यायाम
१७. द्वारका
१८. बापू की बातें
१९. बाहुबली और नेमिनाथ
२०. तंदुरुस्ती हजार नियामत
२१. बीमारी कैसे दूर करें ?
२२. माटी की मूरत जागी
२३. गिरिधर की कुंडलियां
२४. रहीम के दोहे
२५. गीता-प्रवेशिका
२६. तुलसी-मानस-मोती
२७. दादू की वाणी
२८. नजीर की नज्में
२९. संत तुकाराम
३०. हजरत उमर
३१. बाजीप्रभु देशपांडे
३२. तिरुवल्लुवर
३३. कस्तूरबा गांधी
३४. शहद की खेती
३५. कावेरी
३६. तीर्थराज प्रयाग
३७. तेल की कहानी
३८. हम सुखी कैसे रहें ?
३९. गो-सेवा क्यों ?
४०. कैलास-मानसरोवर
४१. अच्छा किया या बुरा ?
४२. नरसी महेता
४३. पंढरपुर
४४. ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती
४५. संत ज्ञानेश्वर
४६. धरती की कहानी
४७. राजा भोज
४८. ईश्वर का मंदिर
४९. गांधीजी का संसार-प्रवेश
५०. ये थे नेताजी
५१. रामेश्वरम्
५२. कब्रों का विलाप
५३. रामकृष्ण परमहंस
५४. समर्थ रामदास
५५. मीरा के पद
५६. मिल-जुलकर काम करो
५७. कालापानी
५८. पावभर आटा
५९. सवेरे की रोशनी
६०. भगवान के प्यारे
६१. हारूं-अल-रशीद
६२. तीर्थंकर महावीर
६३. हमारे पड़ौसी
६४. आकाश की बातें
६५. सच्चा तीरथ
६६. हाजिर-जवाबी
६७. सिंहासन-बत्तीसी : भाग १
६८. सिंहासन-बत्तीसी : भाग २
६९. नेहरूजी का विद्यार्थी-जीवन
७०. सूरजराज
७१. नाना फड़नवीस
७२. गुरु नानक
७३. हमारा संविधान
७४. राजेंद्रबाबू का बचपन
७५. परमहंस की कहानियां
७६. सोने का कंगन
७७. झांसी की रानी
७८. हुआ सवेरा
७९. बीरबल की बातें
८०. मन के जीते जीत
८१. मुरब्बी
८२. हरिद्वार
८३. सागर की सैर
८४. आनबान के रखवारे
८५. महामना मालवीय
८६. भर्तृहरि
८७. देवताओं का प्यारा
८८. देश यों आगे बढ़ेगा
८९. हमारे मुस्लिम संत
९०. नन्हा अबाबील
९१. स्वामी विवेकानंद
९२. आप भला, जग भला
९३. नासिक
९४. सूर के पद
९५. संत वेमन्ना
९६. आराम हराम है
९७. गोरा-बादल
९८. पाटलिपुत्र
९९. महर्षि अगस्त्य
१००. दानवीर कर्ण
१०१. शेख सादी
१०२. गोदावरी
१०३. कुम्हार की बेटी
१०४. नर्मदा
१०५. शंकराचार्य
१०६. अमरनाथ
१०७. महारानी अहिल्याबाई
१०८. पढ़ेंगे-लिखेंगे...
१०९. कोणार्क
११०. मंगू भैया

मूल्य : प्रत्येक का ३७ न० पै०

११०

सस्ता साहित्य मण्डल

मूल्य
सैंतीस नये पैसे